रात्रि क्लास 3-6-68 ओमशान्ति बाप और वर्से को याद करो

बच्चों को तो समझाने में मज़ा आता होगा। दो बाप के ऊपर कुछ समझते हैं? हद का वर्सा और बेहद का वर्सा भारतवासियों को मिला था ऐसा समझाते हो? पत्थर बुधियों को समझ में आता है। समझते हैं फिर बाहर जाकर भूल जाते हैं। ऐसे2 करते समझ ही जावेंगे। कल्प पहले भी समय लगा होगा। कल्प पहले जितना समय लगा था स्थापना में इतना जरूर लगेगा। आज जो सर्विस की वह कल्प2 ऐसे ही की होगी। कल्प पहले भी ऐसे ही हाथ उठाया होगा। बच्चे जितना याद में रहेंगे उतना हुलास भी रहेगा। याद की यात्रा से हुलास वृधि को पाता है। ड्रामा को समझना बहुत जरूरी है। है तो सारा सृष्टि का चक्र। जिसने यह न समझा है वह कुछ भी समझ नहीं सकते। जो यथार्थ रीति धारणा करते हैं वह कुछ न कुछ समझा सकते हैं। धारणा नहीं होती तो समझा नहीं सकते। किसको सुख नहीं दे सकते। तुम बच्चे हो दुःखदाई को सुखदाई, सुखधाम का मालिक बनाने वाले। इतना बच्चों को नशा रहता है। ओपिनीयन जो लिख कर देते हैं उनके पास फिर जाना चाहिए। जिनको पक्का निश्चय होता है भगवानुवाच वह हमारा बाप भगवान है। कृष्ण तो बाप हो न सके। परम पिता परमात्मा वह एक ही है। यहां अच्छा है बच्चे तो आते ही हैं। खर्चा भी इतना नहीं होगा। तुम्हारे चित्रों में ज्ञान है। भक्ति के चित्रों में ज्ञान नहीं है। इसमें लिखा हुआ भी है शिवभगवानुवाचः। बच्चों को भी बाबा समझाते रहते हैं भाई2 देखना है तो यह आदत पड़ जावेगी। शरीर में दृष्टि न जाये। इसमें मेहनत है। जब तक भाई2 न समझा है कर्म इन्द्रियां शैतानी करती रहेंगी। आधा कल्प शैतानी की है ना। बाप खुद कहते हैं यह ध्यान में रहे हम भाई2 हैं। उनका निवासस्थान वहां है। इस टबे जमाने में टाईम लगेगा। अपने ऊपर जांच करनी है। मैं में भी टेव पड़ी है। यही डिफीकल्ट सबजेक्ट है। जरा भी चंचलता न आनी चाहिए कोई भी किसम के। जितना सहज है तो उतना डिफीकल्ट भी है। यह पद पाने लिए। इस पायन्ट आठ दानों की यह स्कालरशिप है। यह बाप की डायरेक्शन सभी आत्माओं प्रति है। परन्तु पहले2 यह नहीं समझा सकेंगे। कुछ नहीं समझेंगे। पहले तो बाप को समझो। बाबा बाबा तो करते रहते हैं। पहली बात है यह। एक लौकिक दूसरा पारलौकिक। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 4-6-00 :- सदैव बच्चों को ख्याल रहना चाहिए हम जो श्रीमत पर सर्विस कर रहे हैं नई बात नहीं अनेकानेक बार हमने की है। जो कुछ होगा कल्प पहले भी हुआ है अत्याचार आद जो हुये वह कल्प पहले भी हुआ है। पीछे की बात को देखना न चाहिए। हम आत्मा ने यह पार्ट बजाया है। तुम हो अविनाशी एक्टर्स। तुम्हारे लिए नई एक्ट नहीं। तुम जानते हो अत्याचार आद होंगे अनेक प्रकार के विघ्न पड़ेंगे। उनका चिन्तन नहीं करना होता है। बाप सुखदाई है हम बच्चों को भी बनना है। सुखधाम के मालिक बनने लिए सबको रास्ता बताना है। तुमको यह पता है। न पास्ट में थे न फ्युचर में होंगे। सिर्फ अभी ही यह ज्ञान है कि अनेक बार यह पार्ट बजाया है। तुम्हारे जैसा खुश नसीब एक्टर कोई हो नहीं सकता। तुम इस बेहद के फिल्म के हीरो-हीरोईन का पार्ट बजाने वाले हो। इन से ऊंच पोजीशन होता नहीं। सर्विस करने वालों को बहुत खुशी होती है। तुम्हारी आगे चल बहुत महिमा होगी। तुम मनुष्यों को जीयेदान देते हो। रात दिन किसका जीवन हरे मिशल बनाते रहें यही ओना रहेगा तुमको इसलिए बाबा जोर देते रहते हैं म्युजियम बनाओ। आगे चल कर तुमको बहुत मकान मिलेंगे। कहेंगे यह बिल्कुल ठीक है। यहां है हिंसा। काम कटारी को ही मुख्य हिंसा कहा जाता है। चीदे2 अक्षर डालनी चाहिए। ड्रामा अनुसार सर्विस वृधि को जरूर पावेगा। खर्चा का ख्याल नहीं करना चाहिए। पापात्मा से पुण्यात्मा मनुष्य से देवता बनाना यह तुम बच्चों का फर्ज है। अभी तुम बन रहे हो। फाईनल जब होगा तब तुम्हारा यह शरीर छूटेगा। भारत बल्कि वर्ल्ड की सच्ची सेवा बाप तुम बच्चों से कराते हैं। तब ही फर्स्ट क्लास प्राई ज मिलती है। खिट2 तो चलती रहेंगी। तुम ऐसे हो समझो बाप के साथ आये हैं। जंगल को मंगल बनाने। बाप आते ही हैं सभी के दुःख दूर कर सुखधाम विश्व का मालिक बनाने। सारे ड्रामा में तुम्हारे जैसा पार्टधारी ऊंच कोई नहीं। वह एक्टर्स कितना कमाते हैं। तुम बच्चे तो विश्व के मालिक बनते हो। तो इतनी खुशी होनी चाहिए। तुम्हारे जितना नाम और कोई का हो नहीं सकता। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

*::****::*